By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-9

Topic – Fascism

Class – B. A. Degree – III (Hons., P-VIII)

Subject – Political Science

Date – 10 August, 2020

By Rahul Kumar Jha.

फासीवाद :-

साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद का समर्थन :-

फासीवादी राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए युद्ध को अनिवार्य मानते हैं। उनका कहना है कि युद्ध खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त कराने का साधन है। इसमें अयोग्य व निर्बल राष्ट्रों का सफाया हो जाता है और योग्य व्यक्तियों को ही जीने का अधिकार प्राप्त होता है। इससे साहस, त्याग, बलिदान जैसे गुणों का विकास होता है और राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि होती है इसके द्वारा शक्तिशाली राष्ट्र को साम्राज्यवाद का विस्तार करने के अवसर प्राप्त होते हैं और राष्ट्र की आत्मा उन्नत होती है।

मुसोलिनी ने राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने के लिए युद्ध को अनिवार्य मानकर साम्राज्यवाद की नीति का पालन किया। उसने कहा- "इटली का विकास एवं जीवन तथा मृत्यु का प्रश्न है। इटली का प्रसार होना चाहिए या उसे मर जाना चाहिए।" इस तरह मुसोलिनी ने सैन्यवाद तथा साम्राज्यवाद की नीति का प्रसार करके विश्व शांति को धक्का पहुंचाया। उसकी यह नीति विश्वयुद्ध का कारण बनी। उसने इथोपिया पर आक्रमण किया और साम्राज्यवाद का प्रसार किया। इस प्रकार फासीवाद साम्राज्य का समर्थक है और विश्व शांति का विरोधी है। साम्राज्यवाद और विश्व शांति सर्वथा एक-दूसरे के विपरीत होते हैं। इनमें कभी तालमेल नहीं हो सकता।

(11) धर्म और चर्च में विश्वास :- फासीवाद एक अवसरवादी विचारधारा है। प्रारंभ में तो फासीवादियों का धर्म में कोई विश्वास नहीं था लेकिन उन्होंने जब यह महसूस किया कि

धार्मिक विश्वास के बिना उनके राष्ट्रवाद का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता तो मुसोलिनी ने धार्मिक नेताओं के साथ 1929 में समझौता करके धार्मिक समर्थन भी प्राप्त कर लिया। इस तरह फासीवाद धर्म और चर्च में अपना गहरा विश्वास व्यक्त करते हैं। वे संस्कृति व सभ्यता के विकास में धर्म को बहुत महत्वपूर्ण मानते है।

मुसोलिनी ने मार्क्सवादियों के धर्म विरोधी विचारों की निन्दा की। और कैथोलिक धर्म को राजधर्म घोषित किया। इससे उसकी निरंकुश सत्ता को पोप व जनता का औचित्यपूर्ण धार्मिक समर्थन मिल गया। इसी तरह जर्मनी में हिटलर ने जर्मन जाति व धार्मिक विश्वासों को महत्व देकर अपनी पैठ बनाई।

CHAPTER CONTINUES....